

স্বরলিপি

মৌন আরতি তব বাজে নিশদিন।
ত্রিতুবন মাঝে প্রতু বাণী বিহীন॥

সন্তুষ-শ্রদ্ধায় গ্রহতারা দল
ছির হ'য়ে রয়ে অপলক অচপল;
ধ্যান-মৌনী মহাযোগী অটল,
আপন মহিমায় তুমি সমাসীন॥

মৌন সে সিক্ষৃতে জল-বিশ্বের প্রায়
বাণী ও সঙ্গীত যায় হারাইয়া যায়।

বিশ্বে অবিমেষ চোখে চেয়ে রঞ্জ
তব পানে অনন্ত সৃষ্টি প্রলয়।
তব শ্রব-লোকে হে চির অক্ষয়,
সকল ছন্দগতি হইয়াছে লীন॥

কথা ও সুর—কাজী নজরুল ইসলাম

স্বরলিপি—ক্রীজগৎ ষষ্ঠক

II ৩ ধা ধণধা ধপা | ০ পমা মগা রগা রসা | ১ সা মা মা মগা | ২ গা পা -্ব -্ব I
 মৌ ০ ন ০ আ ০ | র ০ ত ০ ত ০ ব ০ | বা জে নি শি ০ | দি ০ ০ ন

ধা না সা র্ব | সনা নসা ধাণ ণপা | গা গা না ধা | পা -্ব -্ব -্ব -্ব II
 ত্রি ভু ব ন | মা ঝো প্র ভু | বা ০ নী বি | হী ০ ০ ন

৩ পা -্ব পা পা | ০ পনা -ধা না -সা | ১ সা সা সা সনা | ২ সা -্ব -্ব -্ব I
 স ম্ ভ ম | প্র ০ দ্বা ষ্঵ | প্র হ তা রা ০ | দ ০ ০ ন

না -সা র্ব র্গম্রা | র্ব -সা -সা সা সা | সা -্ব ধা ধা | ধা -্ব -্ব -্ব -্ব I
 ষ্ব ব হ ষে ০ ০ | র ষ্ব অ প ল | প্র ক অ চ | প ০ ০ ন

মা -্ব মা মগা | -পা পা ধা পা | মগা -মরা রা রা | সা -্ব -্ব -্ব I
 ধ্যা ০ ন মৌ ০ | ০ নী ম হ | ষে ০ ০ গী অ | ট ০ ০ ন

সা না সা সা | ধা -ধণ পা -্ব | গা গণা না ধা | পা -্ব -্ব -্ব -্ব II
 আ প ন ম | ত্রি ০ মা ষ্ব | তু মি ০ স মা | সী ০ ০ ন

৩
II মা -^১ মগা মা | ^০ রা -রঞ্জি রা রা সা | ^১ রা সা ন্ব -সা | ^২
মৌ ০ ন০ সে | সি ০ ন্ব ধু তে | জ ল বি ম্ | দে ০ ব্ আ ০

-† -† -† -† | -† -† -† -† | ରା -ଗା ମା ପା | ମା -ଧା ପା -† I
୦ ୦ ୦ ୦ | ୦ ସ୍ୟ ୦ ୦ | ବା ୦ ଶୀ ଓ | ସ ଶୁ ଶୀ ତ,

ମା -ତ୍ ଗା ମା | -ରା ରଜା ରା -ତ୍ | -ତ୍ -ତ୍ -ଅରା -ଅରା | -ଅମା ତ୍ -ତ୍ -ତ୍ I
ଧା ସ୍ ହା ରା | ଇ ସା ୦ ଧା ୦ | ୦ ୦ ୦ ୦ | ୦ ଯୁ ୦ ୦

ପା -ା ପା ପା | ପନା ଧା ନା -ସ୍ତି | ସ୍ତ ସ୍ତ ସ୍ତ ସର୍ନା | ସ୍ତ -ା -ା -ା I
ବି ୦ ଅ ସେ | ଅ ନି ସେ ସ୍ | ଚୋ ଖେ ଚେ ସେ ୦ | ର ୦ ୦ ସ୍

ନାସୀର୍ବା ମର୍ଗଭ୍ରତ | ମର୍ବା ଅର୍ବା-ଅର୍ଦ୍ଦୀ ସା | ସୀ -ତ ଧା ଧା ଧା -ତ -ନଧା -ନପା |
ତ ବ ପା ନେ୦୦ | ଅ ନ ନ ତ | ମୁ ଷ ଟି ପ୍ର ଲେ୦୦ ମୁ

ମା ମା ମଗା ମର୍ବା | ରା-ପା ପା ପା | ମା ମା ମର୍ବା-ରଙ୍ଗା | ରମା -୧ -୨ -୩ I
ତ ବ ଖୁ ବୁ | ଲୋ ୦ କେ ହେ | ଚି ର ଅ ୦ | କ୍ଷ ୦ ୦ ସୁ

ଶ୍ରୀ କୁମାରମ୍ଭା ସଥା | -ଧାର୍ଣ୍ଣ ଧପା ପା | ପଗା-ଣ୍ଟ ଗା ଧା | ପା-ନ୍ତି-ରା II]
ସ କ ୦ ଲ ୦ ୦ ଛ | ନ ଦ ଗ ତି | ହ ଇ ଯା ଛ | ଲୌ ୦ ୦ ନ